TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4373**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

र्दपाडलफाग॥ सासणदेवीय सामिणि पुऊजस्मा निधि कीजइ। उपनत्याफलगाईइय एसुगुणनामनवीकइ।
मंगलकलसनणउ बंधकरवा सुकराग। आतिन्या श्रीजिनचरितश्रकौकधरिसुफाग॥२॥ तकृयणी नगरी वि
सालइ तिसरति सुराणी। वयरसिंहदतहां सुणतीप सोमवंद्याराणी॥ सविनदा धनदत्तवसइ आवकगुण
रूउ। धम्मश्री सुविनीत सीलगुणगणद्धिपवित्र उ॥३॥ वयवादानसनमानतलीमतानामानारी। सुवतीगुण
वतीसती श्रियप्रेमपियारी। धणितिवनइ संताननव रवइपवनघोषि। सविदे षिषिताकरइ धनमाधि
सुषमोहि॥४॥ परमसरधनसुपदीयउ। तिणिसु ननविदीनउ। तिणसुत विणपूद्वा सजिनउ
धनयणविझ्नउ। नाकितजिसामारवलगाद धीनइवेवइ। इणिपरिमे विदीयइ विवाहनारी
सुधाभावइ॥५॥ सुणिउ नंदनपाल॥ डीयसुघदेषि यस्सुणिमणउ। रमणीकहिलरसार। इधकारणउ
सूनइकिमउ। तसुकुकदउविचार॥६॥ सुणिउडीत सवालदा। इणिसंसारिअसार। नरनवजिनधमदा
क्षिलउ। लाधउजनममवारि॥७॥ सुणिउ। सविकदइ मारीसणउ। अम्हनइन द्वीयसंतान। इमचीनववा
अदनिसइ। सुकचितिवसइ नआन॥८॥ सुणिउ। सतिसामारमणीकदइ। उनइवेचितदीइ। धनसंता
नसमाधिसु। सुषविलसइ सवकोइ॥९॥ सुणिउ। तेहिजउन्नकरउअम्ह। दिवसगुरुपदसेव। घउअम्हदा
नसुपात्रनइ। आराधउजिनदेव॥१०॥ सुणिउ। इसकरतांकइसुतकवइ। नउअतिलउविवाहि। नबीनरिप 1

श्लोक साथि वउं करिउ धर्मसरता र ॥१४॥ सुणि॥ हरषित मे विकहइ इसउ। मन साव तउ देस। तइ सुकलइ
छित चिंतवी। न्यारि सलीमति दिसि ॥१५॥ सुणि॥ जिनवर प्रतिमा पूजिवा। मनमालीनइ हकारि। सुयफ सणी धन
घइ घणउ। आपणा जाइ सवारि ॥१६॥ सुणि॥ सजिय जिनप्रतिमा घरइ। देवहरइ जिनराय। सेवक रीति जस ग
ति सुं। प्रणमइ सद्गुरु पाय ॥१७॥ सुण ढाल॥ जिनपूजा निति करइ इणि परि। सुणि वषाण सुसाधुनी। पचखाण
करी यसु श्रुति थिन इ प्रतिलाभ सलोइ धनला सन नउ इड कालि आवस्यक करइ नि सा दमी वछल करइ
इणि परइ आसणा दवि ढवी सुवनउ नेवर वरइ ॥१४॥ धनदत्त हरषित मनि थ्रमच धरम तणइ परताचि
मो वनकल स सुघनइ लहस उ। नारिक हइ निसि आवि ॥१५॥ सुण। प्रियकहइ आवी सुपन कहती
वयरि सु अरतन धर्म्ह थउं। नवमासि अधिक सुतत जीयउ। नाम मंगलकलस मकरिउं। वडमानी परिकला
पवत उआ व वरषथया। जि सइ। दिन प्रति इ नातकि हासि धारउ सुणतउ सुत्र कहइ इति मइ ॥१६॥ दूहा॥ च
उअ लि आराम नइ सुहफलेवा काजि। दिन प्रति देहरासरइ जइ पूजइ श्रीजिनराजि ॥१७॥ कुणि आ वि सु माघ
उम्ह। जाएवा आराम। पयउ माधि आरामिक इ दी धा फल अभिराम ॥१८॥ चउपई॥ फल लेई होया जिणह र
इ कलस आवारलु वयथिणि करइ वीजइ दिन कहइ कंआणि सु। पिरह वष इम्यधानउं ॥१९॥ अति आय
ह मानी तसु वचन। दिनप्रति आणइ कुमर तेसु मन। धर्मा त्यास करइ इणि परइ। प्रथम वृत्तांत इणइ अवसरइ

१

॥२०॥ नरत षेत्रि चंपा महापुरी। अमरापुरि जाणि अवतरी। सुरसुंदर नामइ भूपाल। गुणावली राणी गुणि न
ल ॥२१॥ कल्पलता दीठी सुपनमइ। रानइ विचार की अइमनगामइ। सुता जनमा दोहस्यइ ह्म घरइ। दषत सुख
नयण सुरव करइ ॥२२॥ प्रसुक मिजाई गुण सुंदरी। दीधउ नाम त्रिलोकसुंदरी। लवणिम रूप तणी जे दरी।
जोवन वइ आ पहर अवतरी ॥२३॥ मृगलोयणि मुषचंद समान। नासा कीर कोकिला वाणि। उज्जलदसन
अधर अतिरंग। जघन नयण पीन उतंग ॥२४॥ केहरि लंक हंसगामिनी। सील श्रंगार धरइ कामिनी। नर
पति देषि वीतवइ इसउ। एनउ जोगि किसिउ मिलिसि इकिसउ ॥२५॥ राणी सुणउ कुमरी केहनइ। त्रिकु
हउ आपउ तेहनइ। जीवनवय कंती बालदी। परदेसइ परदेस्या नदी ॥२६॥ आपणा मंत्रि सुत्र तेहनइ।
परणावउ बेटी एहनइ। सुबुधि मंत्रनइ बोलावीयउ हरषित राय घरइ आवीयउ ॥२७॥ मंत्री सुणि तो नहराय
उनइ मइ बेटी दीधी इक मनइ। सुहृत उकहइ सुण उ नरराय। पहिवात हमना वइ दाय ॥२८॥ मरषइ कलि
राजा सुत सणी। परणावीयइ कुमरि आपणी। राजा कहइ मइ दीधी सही। मरी सुसा बालिवचन ही ॥२९॥ सुद
नउ घरि आवी चीतवइ। किसी विमासणि कीजइ हिवइ। कुष्ट रोग दूषित मम सुत। किम परणा विसुपद अद्भु
त ॥३०॥ राजा नइ आयह एतलइ। आगइ नदीपी बइवा घलउ। आणी जइ इजइ कुमरी घरइ। तउ लषमी आ
वइ बहु परइ ॥३१॥ हालधन इतेक गिन्हाणीयइ। मनि चिंतवइ इणि परइ। मंत्रि लोभ अवकेपाय अलदेवी

2

आराधिसुं मनवंछितदो तेकरिस्यइ आया ॥२२॥ श्रुतबुद्धि सहलीसु कळथ नीली ॥ डणबुद्धि इच्छ्यो मायसइ आणंद ॥ सु० ॥
विधि आराधी देवता ॥ निपरतधि आवीया ॥ सि किणि काजइ समरी उम्हे ॥ तकहिउ दालिम आपराणि ॥
२३ ॥ सु० ॥ हेसमरथ जाणइ सक्ता ॥ अम्हउत्तनवाज रोग ॥ तिमकरउ आणंकिपा ॥ जिमथायइ हीसुतनी रोग ॥
२४ ॥ सु० ॥ कहइ देवता मंत्रीसुणउ ॥ नविकर्म छूटइ कोइ ॥ कोटिउपाय करउ घणा ॥ विण भोगव्या हो निर्मा अ
तनहोइ ॥ २५ ॥ सु० ॥ मंत्रि कहइ देवी सुणउ ॥ रूपवंत आ णउ कोइ ॥ तहनइ विवाहि सुकुमरी ॥ इम आपि सदो
मिजउत्तनइ राजाइ ॥ २६ ॥ सु० ॥ आणि सुकुपरदेसथी उरपोलनइ जडवारि ॥ बालकनइ लेईकरी ॥ उ
ल्ह करिज्यो ल्हाकाम विवारि ॥ २७ ॥ सु० ॥ मंत्रीसर दरषितथयउ ॥ बीवाहक रियाकाज ॥ दयपाल
नइ सदेस कहि ॥ रषवालउ हारा ॥ थउ मंत्रिराज ॥ २ ८ ॥ सु० ॥ चंपा मल्हार ॥ उज्जयणी नयरा जिहांजी ॥
कुलदेवतितिहां जाइजी ॥ मंगलकलसजिणमारग इ तिणानसबद कहोइ ॥ २९ ॥ धनश्री ॥ त्रैलोकसुंदरीजी ॥
तेहनइ परुवउ जीसरतार ॥ माफइ परणेस्यइ जाई ॥ चंपानगरिमहाधि ॥ ४० ॥ धनश्री ॥ बालिसुणी संसइ धरइजी ॥ क
हि सुपितानइ वात ॥ बीजइ दिनवलि इम सुणि उजी ॥ श्रीकरण इसुतात ॥ ४१ ॥ धनश्री ॥ इम चिंतवतां कुमरनइ
जी ॥ वावलितां णीजाइ ॥ कपाली आणि उतिहां ॥ चंपानयरी वाइ ॥ ४२ ॥ धनश्री ॥ पुछिनयरच्छितसरोवरइजी ॥ करिय
अमृतजलपान ॥ नगरीपरसिरितमयउ ॥ संध्यासमयनिदान ॥ ४३ ॥ धनश्री ॥ संकेतीनरलेगयउजी ॥ सुहताभंदिरा

हि ल्हवणवसन सोजनहरी ॥ वेसास्यउ मनमाहि ॥ ४४ ॥ धनश्री ॥ किणिकारणि सुजनइसदाजी ॥ तणतिहवर
इ धरिल्याउ ॥ परादयीनइ कुणकरइ ॥ अम्हनइ तसमकाउ ॥ ४५ ॥ धनश्री ॥ कुणनयरी कुणदेसथउ ॥ कुणरा
जा कुणउच्छ ॥ कामकिसउ उल्हारइ कहउजी ॥ तिसमकाउउ अम्ह ॥ ४६ ॥ धनश्री ॥ मंत्रिकहइ चंपापुरीजी ॥
अंगदेसअभिराम ॥ सुरसुंदरनरपतिइहांजी ॥ मंत्रिसुबुधिसुजनाम ॥ ४७ ॥ धनश्री ॥ राजसुता अनिसुंदरीजी ॥
माहरासुतनइ काजि ॥ दाधीतेहनकोहोयउजी ॥ किमय रणावु आज ॥ ४८ ॥ धनश्री ॥ तिपरणीसुजनउत्तनइजी ॥ दिइ
उल्हघरिजाउ ॥ इणअरथइ आणितउनइजी ॥ ऊल व्हीलहिदाउ ॥ ४९ ॥ धनश्री ॥ मंगलकहइ किहांसुम
णीजी ॥ सगिजिसउ किहांकाय ॥ तिमरोगीसुतकोडी उजी ॥ रूपवती नहीलाग ॥ ५० ॥ धनश्री ॥ पहअकु
रिजानहीकरूजी ॥ एककर्मचंडाल ॥ मंत्रिकहइ अण मारिस्युं ॥ काडीखडगकराल ॥ ५१ ॥ धनश्री ॥ सादसधर
मंगलमणइजी ॥ मरिवउ छइ एकवार ॥ एककर्मकरि सुनहीं ॥ लहिश्रावकअवतार ॥ ५२ ॥ धनश्री ॥ विविपर
धानइरषपघ्याजी ॥ मंगलनइसमकाइ ॥ वणिगबुधिनिजकेलवी ॥ पहिलउतातिलाउ ॥ ५३ ॥ धनश्री ॥ राजी
जीयइदाइउजी ॥ तसुकथ्युमंत्रीस ॥ परणीअम्हारीयाधि ज्यो ॥ दमउम्ह विवहिंगदीस ॥ ५४ ॥ धनश्री ॥ उज्जय
नीपहुंचाविज्योजी ॥ चिंतस्युं अम्हनइ बोल ॥ उदतइ मान्यववचनते ॥ रंगरलीचितबोल ॥ ५५ ॥ धनश्री ॥ दालक
लाजा ॥ स्नानकरावीयरंगइ ॥ कुमरनइ धरिउच्छरंगइ ॥ कांधला विविधशृंगार ॥ वस्त्रालरणइ कार ॥ ५६ ॥ गइ

वरघंध आगे हुइ । हणंडेजा ण मनमोहइ । जाणिका मकुमार । सुंदरि जोइ नरनार ॥ ५३ ॥ राजा अधिक आणंद
बोल्या वानरहंद । गावइ मंगल गीत । सधव वधू कलरीति ॥ ५५ ॥ च्यार मंगल मंडी । अपणकरी विनंडी । दी
धी वस्त्र आनका । आभरण दिध्य विवेका ॥ ५६ ॥ बालक बालुक बोले । मणिमाणिक रथ घोले । कुमरी नइ हइ घलेवइ
। प्रीतइ नरपति देवइ ॥ ५७ ॥ अस्वंघ वणि दीधा । हथमुकलेवाण कीधा । वाजित्र वाजतें हर । दान दिया जन सह
र ॥ ५८ ॥ मंगल वरतीयाल आवाउ घर माहि संवधू सम स मंगल सुंदरी बिहि सुणदर आव्याए देवि ॥ ५९ ॥
सुहतो नावज ण वइ । मंगलवादि स्यावइ । जोरिन काबाउ पजावइ । राजा नइ मन नावइ ॥ ६० ॥ वनसि
न निकुणति पिपि । कारणक व ण विशीपि । पति नौ पामन बेमहइ । कुमरी हहित नघरइ ॥ ६१ ॥ बिहि वि
नामि मिसिकवाउ । सुंदरि मेल्हइ नेहवउ । राग धरीन विबालइ । मनइ चिंतव रिनीलइ ॥ ६२ ॥ कहउ कुम
र काई बाधइ । कुधा दीपइ विणु साधइ । सुविता मोद कजाण्यावइ । स्वामील्यउ भल्लावइ ॥ ६३ ॥ मंगल
नावक णावइ । पनउ मीद कन्नावइ । उजोयणी जलघावइ । नन दमघरव सुहावइ ॥ ६४ ॥ समकारि विकुमा
री । अघट न वात अविचारी । मातान उघरि हो माइ । अवंती माम त उलेम्यइ ॥ ६५ ॥ दाधा पवन बोल । सघला कालि
अबोल । निकस्यउ तमि मिलिइ । आविसुमदी यवलेइ ॥ ६६ ॥ मंदिर घकायनी कलियउ । जोई साघनइसि
लीयउ । दाधा वस्त्र संभाली । दयरघ सोवनथाली ॥ ७० ॥ भुवनइ तेह कलावउ । वजायणा पधिआवउ । सखी

३

निरखियकी धउ । केदीधउ तेई लीधउ ॥ ७१ ॥ बालवंवक उलेसालीउ । मातपिता मंगलतणा प । बकुविधक
रीयते मोग । तेउ रकर छिन मयाप । मंगलतणइ संयोग ॥ ७२ ॥ निजकुसलघरि आवीयाप । उरवउ णप
संजोग । मंगलकलस आवीयाप । रमकुमरि वहाउ घरसणीप । आवनउ दमीं तमात । विणउलघउ तिण
नवीप । मारगनदी इदाजातेउ ॥ ७३ ॥ निजय । नवपतिया लिमा देवायउप । मायक बहासविनइजाइ । ते मे विमा
साभूउ मधयाउप । देपिउनउ लिघउ ताइ ॥ ७४ ॥ तिण आ लेगीघोलइ लीयउप । मातपिता धरिराग । मनि आण
द अतिमाणउप । धनरउ जसोनाग ॥ ७५ ॥ तिण दरी घतमा डइ ह बइइसमउप । किदां रहउ किणविरतंत
परिछिकि दालदाप । अचरिज वदम दंत ॥ ७६ ॥ बात मोहीन इस विकदीप । अदाहउ उनेमाग
। दिवसस्वबंधामि दाडा । डिल्हानदी कदनोला ग ॥ ७७ ॥ तिण सबकला लणि सु आव्हेप । पावक
नइघरिजाइ । निउपदत पुणनरइप । करन अत्या सतु छिघाइ ॥ ७८ ॥ तिण पाविलीवात कहीयइ छिवइ
प । मानलिह्याविन लोइ । तिणि मेव किसू कीयउप । उत्रनइलीयउ बालइ ॥ ७९ ॥ तिरूप हालसाधुन घमीय
इ । मंत्री उत्र तिदांगयउ । सिद्याकूटउजाम । दिघउ तेनर कोहीउ । मनमाहि संकीताम ॥ ८० ॥ कर्मदसा फली
थिग२ कर्म अकामी रेप । करफरसण करिवा तणी । उद्यतकुयउ जाम । कुमरी बाहिरनी कली । दासीनउ
उतामार ॥ ८१ ॥ कहि समधिनं कोइ हमणी । उणिसधिगयउ नरनार । कामरुयमनमोहन । नकिमकमनइ निरधा

4

तारे। ८३। कर्म०। द्विवणइ कोई कोढीयउ। आव्यउ मुनि आवासि। ति परहाणी परिहरी। आवी बइठउ न्हायउ सोरे।
८४। कर्म०। दासी मादउ इरही। राति विदाणी नाम। पी हरिय जती सुंदरी। सुहतइ जाणी अम्हका मोरे। ८५।
कर्म०। ऊंधी राजा कन्हइ। बइठी करि सुषमाम। इबइराय विधवा दस्युव। उद्धन इदीधनइ वामि रे। ८६।
कर्म०। कमजणी राति मुकाड्या। कदिवा जोग नराजा। कमरजे देषिउ तेति सउ। षिणि तेष यउ रा अकाजो
रे। ८७। कर्म०। कमरी नइ समयांग षी। कौवीसय यउक मार। वाधा रवदृष तिकरइ। कायउ कण रतन विणा
हार। ८८। कर्म०। निस्वइ नय जिनवर कहाउ सु षउथ करइ नकोय। पिणव्यव हारइ नयक रो
दोषसुता नइ होइरे। ८९। कर्म०। जइ सइज मदी सुता। तउ किम ऊंतविकार। दीपन दीस
माउह्ना। षयउ ऊजणकर मइ मा रोरे। ९०। कर्म०। उदपंचकरि गयउ। सुंदरि चउ उरे कलंक। इह
अनिष्ट षई सुता। राजा नइ समनि सकोरे। ९१। कर्म०। न विवालावइ कमर नइ। न विलावइ धरि राग
एक इसणइ घरि रही। माता नइ रहइ लागा। ९२। कर्म०। वीतवतीवित मइइ सउ। परवसवइ। कर्म
जि सुनइ विवा जोगय उद्दय षयउ ते अधर्म रे। ९३। कर्म०। कण कलंक पाम्यउ इम इ। किस वेकरू
कहा जाइउं। वस नियनी कर मइ नमी। देवविजंबी मा उरे। ९४। कर्म०। इम ची तवता सीसरयउ। पति आ
णी यणि वच्चन। सहाति हाप ऊतउ ऊस्यउ। कुमरी बुद्धि उपन्नरे। ९५। कर्म०। केणि उपाय तिहां जइ ४

वलषिमि जइसारे। ९६। कलंक कमारि सुंजि महजाणइ संसारो रे। ९७। क०। एकवार माता सुमइ। जइ इवीलाव
इ तात। कानदेई नइ सांसलइ। माहराम निनी वातरे। ९८। क०। माता दे षिनिरादरी। मामा सिंह सामंत। तेह
नइ उणि वीनती करी। तेक दिहाइ निवेतोरे। ९९। क०। राजा नइ तिणि वीनव्यउ। छोरू एम सादोष। दा
नमान इरइ रहउ। वचन इस्वामि बोलाइरे। ९९। क०। एक रूपी सुणि परिहरी। कुमरी विण आधार
आजव मारइ आयदइ। बोलावउ इकवारो रे। ९९। कर्म०। इहा। बोलावी आवी कुमरि क
रिउणाम सुणि तात। उरष वेषउ उऊ कउ ह्ना। षवइजाणइ सुवात। १००। वेष कीयउ तिणि उ
रषनउ। षवसुउ मिघसंघात। आषिणि नगरी सणी। तउ अमु ऊन इतात। १। तिम करि स्ं
जि मवेमनइ। रतीनृत्याग इषाहि। सुंदरि व लइ उथाण कारि। क रिउणाम करजो हि। २।
तालसबल सिनलिय साधि। त्रिलोक सुंदर। सिंह सामंत इयरि वरीए। सुषआव इसउ याणंद
नाचीलता पजतीउ जायणी उरीए। ३। वयरसिंह सुणि राय। आयउ सन मुष चंपापति नंदण सुणि
प जगति सगति करि आणि निज मंदिर सलहउ लोक नादई गुण सुणिए। ४। कणकाम इइणनय
रि आव्यातिक दहनग रिक न्हलाद षिवाए। सिचान इउप कं विम हलइ तिरदाउ। जोवइ उरंगम
एद वाए। ५। तहि जउरंग मदषि आपण उल षावरते जा श्वइ गयाए। इह्यति नाम सुणम सगली। 5

सुखिलही। सुणी कुमर हरषित थयाए॥६॥ सिंहबोला व्यवसाय। मादर उपतिइस। कलावार्य पासइ एव
इए॥ तिहांनइ इहां निमित्रि वानस दिन दिन वाध्इ ऊई आणणउ अवइए॥७॥ आवि वेवि लिरतार। अति आ
णंद करी आसन भोजन उपदेस ए॥ वानथकी सुविसेष वस्त्र अनोपम मंगलनइ राग इव स्यानइ ए॥ ८
पावक कहां वधान इएण वट डीकइ वइ वटमा विलोक मरनइ ए॥ कपाकादि सइ एह ऊंतंकू नइ अ
विराग दृष्टिसु धइ मनइ ए॥९॥ मंगलकदइ कुमा रकस्त कषानक आपण वीनवइ स्हूसु एवउ॥ व
तहि जनिज नारि नामइ इपरणी। एतउ रष वेष कारणकणइ ए॥१०॥ पदइतनि वयजाणि। वा
न कलील मति मकिमएरण। बहीग यउवउ। माद रीवइ तिहां मागि वधनगरीयइ ए॥ अवर कु
सुजनइ षयउवउ॥११॥ जाइहु वीवान जालव एदनइ अहरइ घरि एकि हार स्यउवउ॥ उराप
फालु उजीमना गवाबातिधन्न सिवनइ जाइ कहउ उए॥१२॥ चउपई। मंगलकलस मादि आणि
यउ। कवडइ आसण बइसाणी उ॥ सिंहसुणउ मइए दिबाणी उ। परणउ एतिसुज मनिमानी यउ
॥१३॥ सुणउसिंह जइ सीसवाहाइ। बालक बोलीजाइ जाइ। पदनइ घरि एजुबउ सजकोइ॥ ध
नदनइ आणी सबावाइ॥१४॥ तथनदत्त विस्वसंकाइ। जाणइ परम सरस्यु थाइ। सिंहइ कहावा
तसमकाइ। बिहबइ काहिइ घरल्याइ॥१५॥ सिंह कुमरि पासइ आवी यउ। मी नाल षलइ धाव

५

यउ। उरषवेषतेहरइ करी। आवी पतिपासइ सुंदरी॥१६॥ पइसारइ निज घरि आवीया। जाणि अस्तिन वए
रणावीया। नगर राय नित बोलावीया। सुणी दिषि अचरिज लावीया॥१७॥ मंगलकलस घरि करइ विलास
त्रिलोकसुंदरी सगी आस। सिंह लेई कुमर नाविस। वधावइ वीनव्यउनारस॥१८॥ वली सिंह लिखउ आ
णिवा। मंगलनइ सासरइ आणिवा। मंगल सुंदरी आया पासि। राजा धरी हियइ उल्लासि॥१९॥ मलइ नल
इ सुंदरि नी बुद्धि। दिषउ मुहतातणी कुबुद्धि। विनाद्दो षउत्राहूदवी। सिंह उकलंक विषिणा मीन वी॥
२०॥ कुबुद्धी नइ काढउ मारिवा। मंगल आवउ ऊ गारिवा। सुहतां मइ दिउ जीवादान। राजनइ आप
उ अम्हनइ मान॥२१॥ राजा मानइ अनिज कारि उत्र सलपिता बोलावउ अत्र। मंगलनइ दी
धउ निजराज। उन्यए सायइ सीधकाज॥२२॥ ता लआहियानी॥ यहा लइ उसइ आवीया गावी
या मिलि नरनारि। सुर सुंदर मरए तिगण पति पदवदन कारि। विमणउ सुणि पतिसूध लालीध लावारितसा
रा नवि कजीव निस्तारिवा कारिवा उयविहार॥२३॥ सीमाली सुपालानमानइ मंगल आणि। वणिक अत्र
एस्यु करिस्यइ सयाम अजाण। कदालीनइ राजद रस्युइ ति अतिमान। चउरंग सेन लेइ वधामं
गलकलस प्रधान॥२४॥ उ एए पसायइ ति अरिनागालागोपाइ। जिनवर प्रतिमा एजाकरइ निनिज
घरि आइ। जिन इसा दस्सनिक करावइ आवइ लोग। जिनधर्म इम सावइ इसावइ इराग संयोग॥ 6

२५ ॥ अन्नदिवसि उद्यानइ आव्या जयसिंघसूरि । वंदन चाल्या उच्छव मंगल मंगल वाजित्र तूरि । गुरुजी अमृत
निसमय एह विटंबन देखि । नारदइ परणी आणी नवघण लद्धाय इ विराग ॥ २६ ॥ लक्षणकर्म अमृतारूप
रवलवड तेंत । न्याण करी सबडाण वधाणउ अमृतमनघति । सूरि कहइ सांभलीयइ राजन आपण
कर्म । उदयागत सोगवीयइ ज्ञागवी यइ जिन धर्म ॥ २७ ॥ नलबालू डाम ॥ इणि नरतिस्युं घरइ घति
घतिहवर वामि । धनधन सहू इवा सामवेडइ णिम । मि । श्रीदेवी तेदनइ नारी अतिअभिराम । शीव
इसं तो घडज्ञाण र तिनइ काम ॥ २८ ॥ सामवेड घरुकि त्रिगुण मानी नीकजस बोमि । पति रमणिसं
जाणइ समरिघड समरिघड समरिघ वयामि । जिण दिवस्यु आवक्कति हेक्किणवसइ समान ॥
तिणमा दिमा दिमित्री लाव स्थान ॥ २९ ॥ जिनदे वदेसन रिधनन इकाजि वलतइ । निजमित्र
बालावी वइवा मिलिए कंतइ । लाई सुजइ धनसद समान दीनार । घरविड्या सा तेक्कि त्रेकरी यवि
चारि ॥ ३० ॥ सामथी मेरी सा च विज्ञो धरि राग । इमसी घदिइ नइ जस लवलेनि जमाग । सोमवेड दिवइ
धनघर वस आपणउ मेलि । अनुमादइ घरणी धरमलणी करिकेलि ॥ ३१ ॥ तिणि सुरि एहनी सखिल
दानामइ ज्ञाणि । देवदत्त तणा जिनराज सुपदिवाणि । घरचइ समरउ पतिधरमारख धनकोडि । सानलि
श्रीदेवी साघइ सुहमवकोडि ॥ ३२ ॥ नेरी संगति एकोडी द्विमघरा विस्यइ । फोकट णी फोकइ काइ ६

हेंगरव करेस्यइ । तिणि वचनि कावारइ सुघ विलघउ अतिकीधउ । वलि हासकरी नइ मिथ्या डक्का
इलीधउ ॥ ३३ ॥ तेसो मवेडनइ श्रीदेवीसे घातइ । श्रावकना व्रतल्यइ साधुसंगति विघ्यातइ । तिघ
यासम माधइवविनइ सुरिसोधाम्यि । स्त्रितिपचपल्या पमआयु सोगवी कर्मा ॥ ३४ ॥ सोमवेडनव
आतम क्षआयुम्ह सूपाल । श्रीदेवी सुंदरिघइ नारी तिनबाल । परइव्यइ डाजिउम्ह कीधउ सुणरसाल
तिणि लाक इघरणी वली मिलीत नकाल ॥ ३५ ॥ वासइ श्रीदेवी तजानइ दीधउ आल । इणि नवि
तिणि पामउ एह कलंक कराल । इमसुणी विरत्तउ मंगल कलसनरिंद । सुंदरि ना सुत
नइ दीधउ राज आणंद ॥ ३६ ॥ राजा राणी सुणावइ सदगुरु पासि । लीधउ चारि
तउ तनपालइ धरीय उल्लास । कमिराय रिसी तिनणइ सकल सिद्धांत । गुरुआ चारिज पद
दिघा पउजाणि महंत ॥ ३७ ॥ त्रिलोक सुंदरी घइप विज्ञाणनारि । पाली चारित्र वर अणसण करि
उब्बार । पंचम सुरलोकइ युरुप जनाकरि ध्यान । पामी नरभव वलि पद लहिस्यइ निरवाण ॥ ३८
इमझाणी भवि जिनप्रतिमा नी कीजइ । मान वलव पामी उपतणा फल लीजइ सेवत सोलइ
सइकउपरि गुणपचास । एकीधउ मंगलकलसचरित्र विलास ॥ ३९ ॥ दूहा ॥ अधिक उच्छणउ
कहा उ । मिथ्या डुक्कड तास । पूलताणामादि एकीयउ । मगसिर सुदि वइसाख ॥ ४० ॥ श्री जिनचंदसूरि 7

गुरु। वर्द्धमानगणधार। सुविदितमुनिचूडामणी। जगप्रधानअवतार॥४१॥ खरतरगच्छसुधानिधि। अ-
मरमाणिकगुरुसीस। कनकसोमवाचककहइ। मंगलचरितजगीस॥४२॥ इति श्रीमंगलकलश-
चउपई समाप्ता समाप्तमस्तु॥ श्राविकापुण्यप्रभाविकाद्वादशव्रतधारिकागोरांपठनार्थं श्रीरस्तु श्री